आई एस एस एन 0971-9873

आई सी एम आर पत्रिका

वर्ष-31, अंक-3 मार्च 2017

इस अंक में

- अब समय है क्षयरोग को समाप्त करने का 13
- राष्ट्रीय व्यावसायिक स्वास्थ्य संस्थान, अहमदाबाद द्वारा द्वितीय राष्ट्रीय वैज्ञानिक हिन्दी संगोष्ठी का आयोजन 15
- भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के विभिन्न तकनीकी दलों/तकनीकी समितियों की नई दिल्ली में सम्पन्न बैठकें 17
- राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक गतिविधियों में आई सी एम आर के वैज्ञानिकों की भागीदारी 18
- भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद की वित्तीय सहायता में भावी संगोष्ठियां/सेमिनार/कार्यशालाएं/पाठ्यक्रम/सम्मेलन 19

संपादक मंडल

अध्यक्ष	डॉ सौम्या स्वामीनाथन सचिव, भारत सरकार स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग एवं महानिदेशक, भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद
उपाध्यक्ष	डॉ संजय मेहेन्दले अपर महानिदेशक
प्रमुख, प्रकाशन एवं सूचना प्रभाग	डॉ नीरज टण्डन
संपादक	डॉ कृष्णानन्द पाण्डेय
प्रकाशक	श्री जगदीश नारायण माथुर

अब समय है क्षयरोग को समाप्त करने का

डॉ सौम्या स्वामीनाथन

लोगों की अवधारणा है कि टी बी यानि क्षयरोग पुराने जमाने का एक रोग है। परन्तु जब हम वर्तमान स्थिति को निकटता से देखें तो पता चलेगा कि हमारे समाज में चारों ओर टी बी से पीड़ित लोग मौजूद हैं। भारत में टी बी से बचे हुए लोगों की संख्या बहुत ही कम है। विश्व की एक तिहाई आबादी और भारत की लगभग आधी वयस्क आबादी अव्यक्त अर्थात अप्रकट (लेटेंट) टी बी से ग्रस्त है। इसका तात्पर्य यह है कि उनमें टी बी के लिए जिम्मेदार जीवाणु *माइकोबैक्टीरियम ट्युबरकुलोसिस* की उपस्थिति तो है परन्तु वे बीमार नहीं हैं, और न ही वे किसी अन्य को संक्रमित कर सकते हैं।

टी बी एरोसॉल संक्रमण के माध्यम से फैलता है। इसके लिए जिम्मेदार जीवाणु के दण्डाणु अर्थात बैसिलाई फेफड़ों के माध्यम से शरीर में फैलते हैं और सामान्यतया फेफड़ों को संक्रमित करते हैं तथा एक लम्बी अवधि के बाद परिस्थितियां अनूकूल होने की स्थिति में संक्रमण बढ़ सकता है। यदि ऐसे संक्रमित व्यक्ति का इलाज नहीं किया जाए तो सक्रिय रोग ग्रस्त एक व्यक्ति मात्र खांसी करने और छींकने के द्वारा लगभग 15 व्यक्तियों को संक्रमित कर सकता है।

बी सी जी (बैसिलस काल्मेट–गुएरिन) वैक्सीन शिशुओं में गंभीर टी बी रोग के प्रति सुरक्षा प्रदान करती है। परन्तु यह वैक्सीन किशोरवय और वयस्कों में फेफड़े की टी बी के लिए कारगर नहीं है। टी बी के संक्रमित 10 भारतीयों में केवल एक व्यक्ति अपने जीवन काल में टी बी रोग की चपेट में आता है। परन्तु बाल और वृद्ध आयु वर्ग के लोगों में प्रतिरक्षा प्रणाली के कमज़ोर होने की स्थिति में इसका खतरा बहुत अधिक होता है।

भारत में विश्व की 18 प्रतिशत आबादी आवास करती है जबकि विश्व में टी बी रोग से पीड़ित रोगियों की 27 प्रतिशत संख्या भारत में है। विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा संकलित वैश्विक टी बी रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2016 में टी बी की चपेट में आने वाले 1.04 करोड़ नए रोगियों में 28 लाख टी बी के नए रोगी भारत के थे। वर्ष 2015 में टी बी के कारण कुल 4,80,000 मौतें हुईं जबकि सरकार द्वारा नैदानिक और चिकित्सा सेवाएं निःशुल्क प्रदान की जाती हैं। लगभग 90 लाख लोगों में टी बी की मौजूदगी की जांच की गई और भारत सरकार द्वारा लगभग 14 लाख रोगियों को चिकित्सा प्रदान की गई।

बहुऔषध प्रतिरोधी टी बी (एम डी आर–टी बी) के उभरने के परिणामस्वरूप यह समस्या और तीव्र हो गई है। एक अनुमान के अनुसार भारत में जहां बहुऔषध प्रतिरोधी

टी बी के मरीजों की संख्या सर्वाधिक है। वहीं एच आई वी की उपस्थिति में टी बी रोगियों की संख्या द्वितीय स्थान पर है। औषध प्रतिरोध के बढ़ने के साथ रोगमुक्त होने की दर घटती जाती है।

वर्ष 2013 में बहुऔषध प्रतिरोधी टी बी के इलाज की सफलता दर 52 प्रतिशत थी। भारत में टी बी के इलाज के लिए सामान्यतया रिफैम्पिसिन और आइसोनियाज़िड नामक दवाइयां प्रयोग की जाती हैं। देश में टी बी की चपेट में आने वाले 2.5 प्रतिशत नए रोगी रिफैम्पिसिन अथवा रिम्फैम्पिसिन और आइसोनियाज़िड दोनों दवाइयों के प्रति प्रतिरोधी पाए जाते हैं। वर्ष 2015 के अंत में भारत में बहुऔषध प्रतिरोधी टी बी रोगियों की संख्या 79,000 थी जो वर्ष 2014 की तुलना में 11 प्रतिशत अधिक थी।

दण्डाणुओं की पूर्णतया समाप्ति ज़रूरी

वर्ष 2014–15 के दौरान विश्व में टी बी की घटना दरों में केवल 1.5 प्रतिशत की गिरावट बनी रही। हालांकि, सतत विकास लक्ष्यों और टी बी समाप्ति नीति के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए भारत में प्रति वर्ष टी बी की घटना में लगभग 15–20 प्रतिशत गिरावट लाने की आवश्यकता है। इसके लिए हमें बेहतर साधनों की आवश्यकता है जिन्हें आधुनिक वैज्ञानिक खोजों के साथ जोड़ा जा सके।

हमें निम्न प्राथमिकताओं पर तत्काल कार्य करने की आवश्यकता है :

- टी बी के लिए नवीन त्वरित नैदानिक विधियों और दूर–दराज स्थित केन्द्रों पर किए जाने वाले परीक्षणों को सम्मिलित करना।
- विशेषतया बहुऔषध प्रतिरोधी टी बी के लिए लघुकालिक, सरल और अधिक प्रभावी औषध संयोजनों के साथ नई दवाइयों को सम्मिलित करना।
- नवीन वैक्सीनों को सम्मिलित करना।
- रोगी के इलाज के बेहतर परिणामों के लिए नवाचारी कार्यान्वयन मॉडेल्स का परीक्षण करना और उनको बढ़ाना तथा टी बी के कारण पड़ने वाले आर्थिक भार को कम करना।
- सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आई सी टी) आधारित कार्यक्रम, प्रबंधन और निगरानी को सुदृढ़ करना।
- रोग के कारण उत्पन्न कलंक को घटाने के लिए जागरूकता बढ़ाना और समुदाय के सदस्यों को सम्मिलत करना।

पोलियो तथा मातृ एवं नवजात में टेटेनस समाहित क्षेत्र में मिली ताजा सफलता से प्रेरित होकर भारत टी बी को तेजी से दूर करने के लिए सहमत हो गया है। टी बी से सीधा मुकाबला करने के लिए ठोस राजनीतिक प्रतिबद्धता है और भारत का वर्ष 2017 का बजट प्रस्तुत करते हुए माननीय वित्त मंत्री श्री अरुण जेटली ने वर्ष 2025 तक टी बी को समाप्त करने के लिए सरकार की कार्य योजना का वर्णन किया है।

इसकी नींव डाली जा रही है जैसा कि भारत सरकार टी बी को समाप्त करने के लिए एक भली–भांति पारिभाषित राष्ट्रीय नीतिगत योजना का कार्यान्वयन आगे बढ़ा रही है। अन्य संगठनों की भागीदारी इस नीति का एक महत्वपूर्ण स्तम्भ है। टी बी को समाप्त करने के लिए भारत के कार्यों को बढ़ाने के लिए *इंडिया टी बी रिसर्च ऐण्ड डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन* (भारत टी बी शोध एवं विकास निगम) का गठन किया गया है जिसका उद्देश्य टी बी के प्रति सुरक्षा और उसके निवारण की दिशा में किए जा रहे प्रयासों को पंक्तिबद्ध करना है। यह विविध सहभागियों का एक सम्मेलन है जो टी बी समाप्त करने के लिए एक नवीन प्रयास को अपनाते हुए इस दिशा में कार्यान्वयन करेंगे।

औद्योगिक विषविज्ञान अनुसंधान केन्द्र ने स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, जैवप्रौद्योगिकी विभाग, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी विभाग, वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद, कॉर्पोरेट फाउण्डेशंस और कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के साथ पहले ही एक ठोस भागीदारी स्थापित की है। टी बी के इलाज का विज्ञान उपलब्ध है। अब प्रबल और विविध भागीदारों के साथ कार्य करने के लिए एक नए प्रयास की आवश्यकता है। विभिन्न भागीदारों द्वारा तरह–तरह के विचार प्रस्तुत किए जाते हैं। और इन मिश्रित उदार विचारों द्वारा टी बी के प्रति हमारे सभी प्रयासों को परिवर्तित किया जा सकता है।

इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए जिन क्षेत्रों को सुदृढ़ बनाने की आवश्यकता है उनमें सम्मिलित हैं–निजी क्षेत्र को सम्मिलित करना, तथा प्रौद्योगिकी एवं सचल स्वास्थ्य, रोगी को सहायता एवं प्रोत्साहन, ठोस समर्थन, संचार और समुदाय के स्तर पर प्रचार–प्रसार। टी बी सामाजिक और वैज्ञानिक स्तरों पर एक कठिन चुनौती है। हमें इस खतरे को दूर करने के लिए एकजुट होना जरूरी है।

साभार : दि इकोनॉमिक टाइम्स, नई दिल्ली, 24 मार्च, 2017.

यह आलेख 'विश्व क्षय रोग दिवस' के अवसर पर दिनांक 24 मार्च, 2017 को *दि इकोनॉमिक टाइम्स,* नई दिल्ली में 'टाइम टू स्विच ऑफ दि टी बी' शीर्षक से प्रकाशित डॉ सौम्या स्वामीनाथन, सचिव, भारत सरकार, स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग एवं महानिदेशक, भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा व्यक्त उनके विचारों पर आधारित है।

राष्ट्रीय व्यावसायिक स्वास्थ्य संस्थान, अहमदाबाद द्वारा द्वितीय राष्ट्रीय वैज्ञानिक हिन्दी संगोष्ठी का आयोजन

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के अहमदाबाद स्थित राष्ट्रीय व्यावसायिक स्वास्थ्य संस्थान द्वारा दिनांक 21–22 मार्च, 2017 के दौरान द्वितीय राष्ट्रीय वैज्ञानिक हिन्दी संगोष्ठी आयोजित की गई। दिनांक 21 मार्च, 2017 को प्रातः ''व्यावसायिक एवं पर्यावरणीय स्वास्थ्य समस्याएं व निवारण'' विषय पर आयोजित इस दो दिवसीय संगोष्ठी का भी शुभारंभ सरस्वती वन्दना के साथ हुआ। संस्थान के प्रभारी–निदेशक डॉ सुनील कुमार ने आमंत्रित मुख्य अतिथि डॉ एच.ए. पंड्या, कुलपति (प्रभारी), गुजरात विश्वविद्यालय, अहमदाबाद, विशेष अतिथि श्री चरण सिंह, उपनिदेशक (राजभाषा), स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार, गणमान्य

अतिथिगण द्वारा द्वीप प्रज्ज्वलन

अतिथि डॉ आर.एस. धालीवाल, वैज्ञानिक 'जी', आई सी एम आर, आमंत्रित वक्ताओं एवं सभी प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए इस संगोष्ठी की प्रासंगिकता का वर्णन किया। उन्होंने गुजरात सरकार के माननीय राज्य मंत्री, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण, चिकित्सा शिक्षा, पर्यावरण श्री शंकर भाई चौधरी, और स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग, भारत सरकार की सचिव एवं आई सी एम आर की महानिदेशक डॉ सौम्या स्वामीनाथन से प्राप्त शुभकामना संदेशों से अवगत कराया। तत्पश्चात डॉ सुनील कुमार ने संस्थान द्वारा विभिन्न व्यावसायिक

डॉ सुनील कुमार द्वारा स्वागत भाषण

बीमारियों जैसे कि एस्बेस्टोसिस, सिलिकोसिस, बिसिनोसिस, कोयला मजदूरों में न्यूमोकोनिएसिस तथा कीटनाशकों एवं धातुओं की विषाक्तता से जुड़ी बीमारियों पर सम्पन्न अध्ययनों और संस्थान द्वारा प्राप्त की गई उपलब्धियों से अवगत कराया।

डॉ सुनील कुमार ने संस्थान में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग की दिशा में जारी प्रयासों की जानकारी प्रदान करते हुए फरवरी, 2015 में प्रथम राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी का विशेष उल्लेख किया।

उद्घाटन सत्र में श्री चरण सिंह ने विभिन्न व्यवसाय से जुड़े मजदूरों, कर्मियों के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले पर्यावरणीय प्रभावों/बीमारियों से निपटने की दिशा में संस्थान के कार्यों की सराहना की।

श्री चरण सिंह द्वारा सम्बोधन

गणमान्य अतिथि डॉ आर.एस. धालीवाल ने संस्थान द्वारा आयोजित इस संगोष्ठी को जन सामान्य तक व्यावसायिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में हिन्दी माध्यम में संदेश को पहुंचाने को एक सराहनीय कदम बताया। मुख्य अतिथि डॉ एच.ए. पंड्या ने हिन्दी माध्यम में वैज्ञानिक संगोष्ठी के आयोजन की सराहना करते हुए स्वास्थ्य क्षेत्र में संपन्न शोध कार्यों के परिणामों को अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में भी सम्प्रेषित करने का आह्वान किया।

डॉ आर.एस. धालीवाल द्वारा सम्बोधन

मुख्य अतिथि द्वारा सम्बोधन

संगोष्ठी के प्रथम सत्र में डॉ एच.आर. राजमोहन, पूर्व वैज्ञानिक 'जी', क्षेत्रीय व्यावसायिक केन्द्र (दक्षिणी), बेंगलुरू ने दक्षिण भारत में वर्तमान व्यावसायिक स्वास्थ्य परिदृश्य की विवेचना की।

डॉ एच. आर. राजमोहन द्वारा प्रस्तुतिकरण

डॉ हेमलता वानखेड़े, शासकीय विज्ञान संस्था, औरंगाबाद ने डेंगी, मलेरिया, फाइलेरियासिस की समस्या और उनसे बचने के उपायों की चर्चा की। राष्ट्रीय व्यावसायिक स्वास्थ्य संस्थान के डॉ अंकित विरमगामी ने 'मजदूरों में सिलिका धूल कणों से होने वाले सिलिकोसिस के कारण एवं निवारण' के बारे में जानकारी दी। द्वितीय सत्र में प्रो. एम.एम. सक्सेना, कुलपति, टांटिया विश्वविद्यालय, श्री गंगानगर ने 'खनन, पर्यावरण एवं मानव स्वास्थ्य' विषय पर गहन प्रकाश डाला। गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय, गांधी नगर के डीन प्रो. जे.पी.एन. मिश्रा

डॉ नीता कुमार द्वारा प्रस्तुतिकरण

ने 'पर्यावरणीय घटक एवं मनोशारीरिक स्वास्थ्य' तथा आई सी एम आर, नई दिल्ली की डॉ नीता कुमार ने 'सेहत का बही–खाता परियोजना द्वारा पर्यावरण व स्वास्थ्य समस्याओं के स्थानीय समाधान' विषय पर जानकारी प्रदान की। गुजरात विश्वविद्यालय, अहमदाबाद के प्राध्यापक डॉ अश्विन जनसारी ने 'अरोचकता का प्रभाव और निवारण' विषय पर अपने विचार व्यक्त किए, वहीं हैदराबाद स्थित राष्ट्रीय पोषण संस्थान के वैज्ञानिक 'ई' डॉ इन्द्रपाल मेश्राम ने 'भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में प्रौढ़ों (18 > वर्ष) में व्यवसाय के सापेक्ष उच्च रक्त चाप–एन एन एम बी सर्वेक्षण' विषय पर अपना वक्तव्य दिया। राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिक 'डी' डॉ रजनी कान्त दीक्षित ने 'बदलता पर्यावरण और मच्छर नियंत्रण हेतु नए आनुवंशिक यंत्रों की खोज की आवश्यकता' विषय पर रोचक एवं तथ्यगत सम्बोधन दिया।

डॉ रजनी कान्त दीक्षित द्वारा प्रस्तुतिकरण

संगोष्ठी के तृतीय सत्र में डिब्रूगढ़ स्थित क्षेत्रीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान केन्द्र के वैज्ञानिक 'एफ' डॉ ए.एम. खान ने 'असम के चाय बागान श्रमिकों में श्वसन संबंधित बीमारी, एक व्यावसायिक स्वास्थ्य समस्या' विषय पर अपना व्याख्यान दिया। पटना स्थित अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान संस्थान के डॉ अजित कुमार सक्सेना ने 'पर्यावरणीय अंतःक्रिया एवं प्रजनन स्वास्थ्य,' तथा महाराजा सायाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा के पर्यावरण अध्ययन विभाग के अध्यक्ष प्रो. अरुण आर्य ने 'पर्यावरण, प्रदूषण एवं जलवायु परिवर्तन का मानव स्वास्थ्य पर प्रभाव और पौधों द्वारा उसका उपचार' विषय पर विस्तृत व्याख्यान प्रस्तुत किए। संस्थान के वैज्ञानिक 'बी' श्री पंकज बरफाल ने 'लेप्टोस्पाइरोसिस : रोग की पहचान में आण्विक विधि का महत्व' विषय पर रोचक व्याख्यान दिया।

संगोष्ठी के चतुर्थ सत्र में बिलासपुर स्थित सी.एम.डी. कॉलेज, के पूर्व प्रवक्ता डॉ आर.वी. शुक्ल ने 'पर्यावरण में असंगत नाइट्रोजन रसायन का कुप्रभाव व पीलिया व्याधि'; नई दिल्ली स्थित राष्ट्रीय विकृतिविज्ञान संस्थान के वैज्ञानिक 'एफ' डॉ अरुण कुमार जैन ने 'पॉलीसाइक्लिक एरोमैटिक हाइड्रोकार्बन का मानव स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव'; संस्थान के वैज्ञानिक डॉ सुखदेव मिश्रा ने 'मेज़ोथेलियोमा–एस्बेस्टस जनित बीमारी की वैश्विक व्यापकता की एक सांख्यिकीय समीक्षा' तथा राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर के डॉ हेमन्त पारीक ने 'दीर्घकालिक प्रदत्त बोरिक एसिड का नर चूहों के प्रजनन पर प्रतिकूल प्रभावों के मूल्यांकन' विषय पर रोचक व्याख्यान प्रस्तुत किए।

पंचम सत्र में नई दिल्ली स्थित भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के वैज्ञानिक 'एफ' डॉ रजनी कान्त ने 'वैश्विक जलवायु परिवर्तन, रोगों की समस्या तथा उनका नियंत्रण' तथा आई सी एम आर के ही वैज्ञानिक 'एफ' डॉ के.एन. पाण्डेय ने 'चिकित्साविज्ञान में अनुसंधान परिणामों के प्रसार में भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली की भूमिका' पर व्याख्यान दिए। तत्पश्चात, मुम्बई स्थित राष्ट्रीय प्रजनन स्वास्थ्य अनुसंधान संस्थान की डॉ दीप्ति सिंह द्वारा 'व्यवसाय, पर्यावरण एवं नारी : प्रजनन स्वास्थ्य संबंधी परिप्रेक्ष्य' तथा संस्थान के डॉ ज्ञानेन्द्र सिंह द्वारा 'जन्म दोष के संदर्भ में संभावित पर्यावरणीय कारकों पर एक विश्लेषण' विषयों पर व्याख्यान प्रस्तुत किए गए।

संगोष्ठी के अंतिम सत्र में राष्ट्रीय विकृतिविज्ञान संस्थान, नई दिल्ली की वैज्ञानिक 'सी' डॉ पूनम गौतम ने 'विश्व स्वास्थ्य संगठन और वैश्विक श्रमिक स्वास्थ्य योजना' एवं नई दिल्ली स्थित अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान की सुश्री सुरुचि शर्मा ने 'मानसिक स्वास्थ्य और समुदाय पुनर्वास' विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किए।

दिनांक 22 मार्च, 2017 को अहमदाबाद स्थित गुजरात विश्वविद्यालय के जीवविज्ञान विभाग के अधिष्ठाता प्रो. एन.के. जैन की अध्यक्षता में समापन समारोह का आयोजन हुआ। संगोष्ठी के आयोजन–सचिव डॉ लोकेश कुमार शर्मा ने संगोष्ठी का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। मुख्य अतिथि प्रो. जैन ने पोस्टर प्रस्तुति के विजेताओं

ग्रुप फोटोग्राफ

को पुरस्कार और प्रमाण–पत्र वितरित किए।

समापन समारोह के अध्यक्ष डॉ जैन ने अपने सम्बोधन में व्यक्त किया कि राष्ट्रीय व्यावसायिक स्वास्थ्य संस्थान ने न केवल व्यावसायिक क्षेत्र से जुड़े विविध पहलुओं पर अपने शोध कार्यों द्वारा व्यावसायिक कामगारों एवं उत्पादकों को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक कर उन्हें लाभान्वित किया है बल्कि समय–समय पर हिन्दी माध्यम में वैज्ञानिक कार्यशालाओं/संगोष्ठियों का आयोजन कर एक नई दिशा प्रदान की है। कार्यक्रम के अंत में संस्थान के वैज्ञानिक 'ई' श्री पी.बी. डॉक्टर ने मुख्य अतिथि महोदय के साथ–साथ इस संगोष्ठी में सम्मिलित सभी वक्ताओं एवं अन्य प्रतिभागियों के उपस्थित होने और इस कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु धन्यवाद दिया।

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के समाचार

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के विभिन्न तकनीकी दलों/तकनीकी समितियों की नई दिल्ली में सम्पन्न बैठकें :

पोलियोवाइरस टाइप 2 के संशोधन की दिशा में प्रगति (साबिन वैक्सीन और वाइल्ड वाइरस) पर चर्चा करने हेतु बैठक	2 मार्च, 2017
टी बी जानपदिक रोगविज्ञान और कार्यान्वयन अनुसंधान पर कार्यकारी समूह विशेषज्ञों के साथ बैठक	6 मार्च, 2017
ग्लूकोज़ सेंसिंग युक्तियों के वैधतानिर्धारण प्रोटोकॉल पर बैठक	6 मार्च, 2017
जरा मानसिक स्वास्थ्य पर उन्नत अनुसंधान केन्द्र हेतु विशेषज्ञ समूह की बैठक	6 मार्च, 2017
स्वास्थ्य पर टास्क फोर्स के विशेषज्ञ समूह की बैठक	7 मार्च, 2017
आई सी एम आर की कार्य मूल्यांकन समिति (पी ई सी) की चतुर्थ बैठक	7 मार्च, 2017
विश्व पर टास्क फोर्स की जांच समिति की बैठक	8 मार्च, 2017
सामाजिक–व्यावहारिक एवं स्वास्थ्य प्रणाली अनुसंधान (एस बी एच एस आर) प्रभाग की बैठक	9 मार्च, 2017
स्पीक इंडिया वी एल कंशोर्शियम को संचालन समिति की बैठक	10 मार्च, 2017
विभिन्न संबद्ध लॉजिस्टिक पहलुओं के लिए फर्म से चर्चा करने हेतु आई सी एम आर विशेषज्ञ समिति की बैठक	10 मार्च, 2017
कोशिकीय एवं आण्विक जैविकी और जीनोमिक्स हेतु परियोजना पुनरीक्षण समिति की बैठक	14 मार्च, 2017
भारत में थाइरॉयड निगरानी पर तकनीकी समूह की बैठक	14 मार्च, 2017
सार्वजनिक–निजी भागीदारी नीति और दिशानिर्देश पर चर्चा करते हेतु बैठक	14 मार्च, 2017
WHO गाइडैंस डॉक्यूमेंट की अनुक्रिया में महामारियों के निवारण के लिए कार्यवाही हेतु शोध एवं विकास ब्ल्यू प्रिंट विकसित करने के लिए बैठक	15 मार्च, 2017
नैनोमेडिसिन पर फेलोशिप हेतु विशेषज्ञ समूह की बैठक	15 मार्च, 2017
मौलिक प्रजनन जैविकी, बंध्यता, ए आर टी और गर्भनिरोधी विकल्पों को बढ़ाने पर परियोजना पुनरीक्षण समूह की बैठक	15 मार्च, 2017
MD/MS/DM/MCH/MDS थीसिस के लिए वित्तीय सहायता देने हेतु विशेषज्ञ समूह की बैठक	16 मार्च, 2017

आई सी एम आर की कार्य मूल्यांकन समिति (पी ई सी) की बैठक	16 मार्च, 2017
आई सी एम आर के संस्थानों/केन्द्रों द्वारा वैज्ञानिक उपकरणों के क्रय हेतु आई सी एम आर तकनीकी समिति की बैठक	17 मार्च, 2017
कुष्ठरोग में औषध प्रतिरोध की समस्या की समीक्षा करने और उस पर चर्चा करने हेतु बैठक	17 मार्च, 2017
पोस्ट डॉक्टरल फेलोशिप (पी डी एफ) के 15वें बैच के चयन हेतु चयन समिति की बैठक	21 मार्च, 2017
पी डी एफ के 11वें, 12वें और 13वें बैच की समीक्षा हेतु बैठक	22 मार्च, 2017

राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक गतिविधियों में आई सी एम आर के वैज्ञानिकों की भागीदारी

नई दिल्ली स्थित राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान सांख्यिकी संस्थान के निदेशक प्रो. अरविन्द पाण्डेय ने न्यू यॉर्क, यू एस ए में एस्टीमेट्स, मॉडेलिंग और प्रोजेक्शंस UNAIDS पर रेफरेंस ग्रुप की 2 दिवसीय बैठक में भाग लिया (7–8 नवम्बर, 2016)।

पटना स्थित राजेन्द्र स्मारक चिकित्सा विज्ञान अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ प्रदीप दास ने अटलांटा जॉर्जिया, यू एस ए में संपन्न उपेक्षित ट्रॉपिकल रोगों पर परिचालन अनुसंधान हेतु सम्मिलन पर बैठक में भाग लिया (10–11 नवम्बर, 2016)।

नई दिल्ली स्थित राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिक 'डी' डॉ एलेक्स इएपेन ने अटलांटा, जॉर्जिया यू एस ए में ''अमेरिकन सोसाइटी ऑफ ट्रॉपिकल मेडिसिन ऐण्ड हाइजीन (ASTMH) की 65वीं वार्षिक बैठक और CSMi NIH परियोजना की एस ए जी की बैठक में भाग लिया (10–18 नवम्बर, 2016)।

नई दिल्ली स्थित राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान, के वैज्ञानिक 'जी' डॉ आर.सी. धीमान ने मराकेच, मोरोको में एक दिवसीय कांफ्रेंस ऑफ पार्टीज़ के 22वें सत्र (COP22) में भाग लिया (12 नवम्बर, 2016)।

डिब्रूगढ़ स्थित क्षेत्रीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान केन्द्र के वैज्ञानिक 'जी' डॉ पी.के. मोहापात्रा ने एटलांटा, जॉजिया, (यूएसए) में संपन्न मलेरिया अनुसंधान के लिए उत्कृष्ट अंतर्राष्ट्रीय केन्द्र की वैज्ञानिक सलाहकार समूह की बैठक में भाग लिया (12–17 नवम्बर, 2016)।

नई दिल्ली स्थित राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान की निदेशक डॉ नीना वलेचा एवं वैज्ञानिक 'एफ' डॉ अनूप अनविकर ने अटलांटा जॉर्जिया (यू एस ए) में संपन्न मलेरिया अनुसंधान हेतु एन आई एच उत्कृष्ट अंतर्राष्ट्रीय केन्द्र (ICEMR) के वैज्ञानिक सलाहकार समूह की बैठक में भाग लिया (12–17 नवम्बर, 2016)।

मुम्बई स्थित राष्ट्रीय प्रजनन स्वास्थ्य अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिक 'एफ' डॉ एस.एल. चौहान ने बैंकॉक, थाईलैण्ड में सम्पन्न विश्व स्वास्थ्य संगठन की ग्लोबल स्टीयरिंग कमेटी और HRP एलाइंस पार्टनर्स की बैठक में भाग लिया (15–17 नवम्बर, 2016)।

अहमदाबाद स्थित राष्ट्रीय व्यावसायिक स्वास्थ्य संस्थान के वैज्ञानिक 'डी' बी. रविचन्द्रन ने बैंकॉक, थाईलैण्ड में दक्षिण–पूर्व एशिया के बच्चों के पर्यावरणीय स्वास्थ्य (CEH) पर संपन्न कार्यशाला में भाग लिया (18 नवम्बर, 2016)।

चेन्नई स्थित राष्ट्रीय यक्ष्मा अनुसंधान संस्थान की वैज्ञानिक 'ई' डॉ बीना ई, थॉमस ने जेनेवा, स्विट्ज़रलैण्ड में संपन्न शोध क्षमता सुदृढ़ीकरण और ज्ञान प्रबंधन (RCS-KM) के लिए वैज्ञानिक कार्यकारी समूह की बैठक में भाग लिया (21–22 नवम्बर, 2016)।

चेन्नई स्थित राष्ट्रीय यक्ष्मा अनुसंधान संस्थान की वैज्ञानिक 'डी' डॉ वी.वी. बानू रेखा एवं वैज्ञानिक 'सी' डॉ पी.के. भवानी ने सिएम रीप, कम्बोडिया में सम्पन्न 5 दिवसीय'' 8वें दक्षिण–पूर्व एशिया और पश्चिमी पैसिफिक द्विक्षेत्रीय TEPHINET वैज्ञानिक सम्मेलन'' में भाग लिया (28 नवम्बर, से 2 दिसम्बर, 2016)।

नई दिल्ली स्थित राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिक 'एफ' डॉ के. राघवेन्द्र ने रियो डी जेनेरियो, ब्राज़ील में ''उभरते आर्बोवाइरसेज़ के रोगवाहकों में कीटनाशी के प्रति प्रतिरोधः रोगवाहक नियंत्रण के लिए चुनौतियां और संभावनाएं'' पर संपन्न अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला में भाग लिया (5–7 दिसम्बर, 2016)।

पुणे स्थित राष्ट्रीय एड्स अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिक 'बी' डॉ अभिजीत वसंतराव कदम ने टेकनीश यूनिवर्सिटी (TU), ड्रेसडेन, जर्मनी में बाल के नमूनों में स्टेरॉयड विश्लेषण पर संपन्न हैण्ड्स ऑन प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया (12–16 दिसम्बर, 2016)।

पुडुचेरी स्थित रोगवाहक नियंत्रण अनुसंधान केन्द्र के वैज्ञानिक 'जी' डॉ के. गुनाशेखरन तथा नई दिल्ली स्थित राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिक 'एफ' डॉ के. राघवेन्द्र ने जेनेवा, स्विट्ज़रलैण्ड में कीटनाशियों के प्रति प्रतिरोध की निगरानी हेतु कीटनाशियों की विवेकी मात्राओं की अंतप्रयोगशालयी वैधीकरण'' पर विश्व स्वास्थ्य संगठन की परामर्शक बैठक में भाग लिया (13–14 फरवरी, 2017)।

चेन्नई स्थित राष्ट्रीय यक्ष्मा अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिक 'बी' श्री एस. शिवकुमार ने तिमोर लेसे स्थित नेशनल रेफरेंस लेबोरेटरी टी बी का दौरा किया (19–25 फरवरी, 2017)।

हैदराबाद स्थित राष्ट्रीय पोषण संस्थान के वैज्ञानिक 'ई' डॉ जी.एम. सुब्बाराव ने टोकियो, जापान में पोषण विज्ञान में क्षमता और नेतृत्व विकास'' पर IUNS कार्यशाला में भाग लिया (7–9 मार्च, 2017)।

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद की वित्तीय सहायता में भावी संगोष्ठियां/ सेमिनार/कार्यशालाएं/पाठ्यक्रम/सम्मेलन

ICMR वैज्ञानिकों के लिए प्रेरण प्रशिक्षण : अनुसंधान विधियों और अनुसंधान प्रशासन पर कार्यशाला	3–7 अप्रैल, 2017 चेन्नई	डॉ पी. मनीक्कम ICMR नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ एपीडेमियोलॉजी चेन्नई
इलेक्ट्रॉनिक क्रांति में उत्कृष्टता के लिए पुस्तकालय की गतिकी पर अंतर्राष्ट्रीय लाइब्रेरी और सूचना पेशोवरों का शिखर सम्मेलन (I-LIPS) 2017	6–8 अप्रैल, 2017 मोहाली	डॉ पी. विसाखी इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एजुकेशन ऐण्ड रिसर्च (IISER), मोहाली (पंजाब)
जैवप्रौद्योगिकी और पर्यावरण पर राष्ट्रीय सम्मेलन (NCOBE 2017)	10–11 अप्रैल, 2017 नई दिल्ली	डॉ मोहम्मद इरफान कुरेशी जामिया मिलिया इस्लामिया नई दिल्ली
जैवआयुर्विज्ञान अनुसंधान पर शोध प्रणालीविज्ञान कार्यशाला	11–13 अप्रैल, 2017 श्रीनगर	डॉ एस.एम. सलीम खान गवर्नमेंट मेडिकल कॉलेज श्रीनगर (जम्मू ऐण्ड कश्मीर)
कला और विज्ञान में शोधपत्र लेखन पर कार्यशाला	14–15 अप्रैल, 2017 भोपाल	डॉ राजेश गुप्ता चिरायु मेडिकल कॉलेज ऐण्ड हॉस्पिटल भोपाल (मध्य प्रदेश)
व्यावसायिक श्वसनी विकारों पर राष्ट्रीय सम्मेलन-NCORD 2017	21–22 अप्रैल, 2017 रायपुर	डॉ तीर्थंकर घोष रायपुर इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंस रायपुर (छत्तीसगढ़)
भारतीय न्यूरोपेथौलॉजी समुदाय का द्वितीय वार्षिक सम्मेलन, NPSICON 2017	21–23 अप्रैल, 2017 बैंगलोर	डॉ अनिता महादेवन NIMHANS बैंगलोर
परजीवीविज्ञान का 27वां राष्ट्रीय सम्मेलन	25–27 अप्रैल, 2017 बेंगलुरू	डॉ एस. नागारत्ना राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य एवं तंत्रिकाविज्ञान संस्थान बेंगलुरू
आर्थोपेडिक इम्प्लांट (सामग्री) मैटीरियल्स पर शोध में चुनौतियों पर संगोष्ठी	29–30 मई, 2017 अरासूर (विल्लुपुरम)	डॉ जी. पेरमुअल वी आर एस कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग ऐण्ड टेक्नोलॉजी अरासुर (विल्लुपुरम) तमिल नाडु

मोबाइल स्वास्थ्य सुरक्षा प्रौद्योगिकी पर सेमिनार	14–15 जून, 2017 पोलाची	श्री के. मरीमुत्थु पी. ए. कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग ऐण्ड टेक्नोलॉजी पोलाची (तमिल नाडु)
नॉन–इनवेसिव हेल्थ केयर प्रणालियों एवं इंटरनेट ऑफ थिंग्स पर सेमिनार	21–22 जून, 2017 तिरुचेंगोड	डॉ एम. इलंगकुमारन के. एस. रंगास्वामी कॉलेज ऑफ टेक्नोलॉजी तिरुचेंगोड (नामक्कल) तमिल नाडु
वेवलेट तकनीकों का प्रयोग करते हुए मैमोग्राफी में अर्बुदों की प्रारंभिक अवस्था में पहचान	6–7 जुलाई, 2017 कोइम्बटूर	डॉ के.एस. चन्द्रगुप्त मौर्यन श्री कृष्ण कॉलेज ऑफ टेक्नोलॉजी, कोइम्बटूर
जन्तु परीक्षण के विकल्पों में 4Rs के प्रयोगों पर सेमिनार	15–16 सितम्बर, 2017 उधागामन्डलम्	डॉ आर. वेदीवेलन जे एस एस कॉलेज ऑफ फार्मेसी उधागामन्डलम्, दि नीलगिरी (तमिल नाडु)
फर्मास्युटिकल विज्ञान में वर्तमान प्रवृत्तियों और तकनीकी विकास पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन	18–19 दिसम्बर, 2017 इंदौर	डॉ संजय जैन इंदौर इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मेसी इंदौर (मध्य प्रदेश)
जन स्वास्थ्य और सार्वजनिक प्रशासन पर बहुविषयक सम्मेलन	30 दिसम्बर, 2017 धुले	डॉ संतोष शिवकुमार खत्री वी. डब्ल्यू. एस. कॉलेज धुले (महाराष्ट्र)

आई सी एम आर के प्रकाशनों की सूची इसकी वेवसाइट www.icmr.nic.in पर उपलब्ध है। आई सी एम आर के प्रकाशन प्राप्त करने के लिए महानिदेशक, भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के नाम से चेक अथवा पोस्टल ऑर्डर भेजें। बैंक कमीशन तथा डाक व्यय अलग होगा। मनीऑर्डर स्वीकार नहीं किए जाएंगे। इस संबंध में और अधिक जानकारी के लिए प्रमुख, प्रकाशन एवं सूचना प्रभाग, भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद, पोस्ट बॉक्स 4911, अंसारी नगर, नई दिल्ली - 110029 से सम्पर्क करें।

दूरभाष : 91-11-26588895, 91-11-26588980, 91-11-26589794, 91-11-26589336, 91-11-26588707, (एक्स्टेंशन-228),
फैक्स -91-11-26588662 ई मेल : headquarters@icmr.org.in, icmrhqds@sansad.nic.in
सम्पर्क व्यक्ति : डॉ रजनी कान्त, वैज्ञानिक 'एफ'
ई-मेल : kantr2001@yahoo.co.in

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद्

सेमिनार/संगोष्ठियां/कार्यशालाएं आयोजित करने के लिए परिषद द्वारा आंशिक वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है, वित्तीय सहायता के लिए निर्धारित प्रपत्र पर पूर्णतया भरे हुए केवल उन्हीं आवेदन पत्रों पर विचार किया जाएगा जो सेमिनार/संगोष्ठी/कार्यशाला आदि के आरम्भ होने की तारीख से कम से कम चार महीने पूर्व भेजे जाएंगे।

सहयोग : श्रीमती वीना जुनेजा

आई सी एम आर पत्रिका भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद की वेबसाइट www.icmr.nic.in पर भी उपलब्ध है

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के लिए मैसर्स रॉयल ऑफसेट प्रिन्टर्स,
ए–89/1, नारायणा औद्योगिक क्षेत्र, फेज़–1, नई दिल्ली–110 028 से मुद्रित। पं. सं. 47196/87